राग श्री

ए माया आद अनाद की, चली जात अंधेर।
निरगुन सरगुन होए के व्यापक, आए फिरत है फेर।। १ ।।

यह बनने मिटने वाली माया अनादि काल से ही अज्ञान के अन्धकार में डूबी चली जाती है। इस संसार में माया निराकार और साकार होकर सबके अन्दर व्यापक है और जन्म-मरण का चक्कर चलाती है।

ना पेहेचान प्रकृत की, ना पेहेचान हुकम।
ना सुध ठौर नेहेचल की, और ना सुध सरूप ब्रह्म।। २ ।।

इस ब्रह्माण्ड में न किसी को प्रकृति की पहचान है और न जिसके हुकम से यह बनी है उसकी (अक्षर ब्रह्म की) और न अखण्ड घर परमधाम की और न ही यहां पारब्रह्म की पहचान है।

सुध नाहीं निराकार की, और सुध नाहीं सुंन।
सुध ना सरूप काल की, ना सुध भई निरंजन।। ३ ।।

इसमें न किसी को निराकार की खबर है और न ही शून्य, काल तथा निरंजन की खबर है।

ना सुध जीव सरूप की, ना सुध जीव वतन।
ना सुध मोह तत्व की, जिनथें अहं उतपन।। ४ ।।

न जीव के स्वरूप की, न जीव के घर की और न मोह तत्व जिससे अहंकार की उत्पत्ति हुई है, की खबर है।

सास्त्रों जीव अमर कह्यो, और प्रले चौदे भवन।
और प्रले पांचो तत्व, और प्रले कहे त्रिगुन।। ५ ।।

शास्त्रों ने जीव को अमर तथा चौदह लोक, पांच तत्व और तीन गुणों को नाशवान कहा है।

और प्रले प्रकृत कही, और प्रले सब उतपन।
ना सुध ब्रह्म अद्वैत की, ए कबहूं न कही किन।। ६ ।।

शास्त्रों ने प्रकृति को तथा इससे जो पैदा हुए हैं सभी को नाशवान बताया है। इसमें अद्वैत पारब्रह्म की पहचान किसी ने नहीं बताई।

ए त्रिगुन की पैदास जो, सो समझे क्यों कर।
त्रिगुन उपजे अहं थें, और हिजाब अहं के पर।। ७ ।।

यह सारी सृष्टि त्रिगुण से पैदा है। त्रिगुण अहंकार से पैदा हुए हैं। अहंकार के परे निराकार का आवरण है, इसलिए इसके अन्दर के जीव अद्वैत (पारब्रह्म) को कैसे समझेंगे?

ए आद के संसे अबलों, किनहूं न खोले कब।
सो साहेब इत आए के, खोल दिए मोहे सब।। ८ ।।

यह शुरू से ही संशय चले आ रहे हैं जिसे आज तक किसी ने नहीं खोला। श्री महामतिजी कहते हैं कि अब श्री प्राणनाथजी (पारब्रह्म) ने आकर वह सब मुझे बता दिया है।

रूहअल्ला की मेहेर से, उपज्यो एह इलम।
और महंमद की मेहेर थें, सुध कहूं माया ब्रह्म।। ९ ।।

रूह अल्लाह (श्री श्यामाजी) की मेहर (कृपा) से यह ज्ञान मिला और श्री प्राणनाथजी आखिरी मुहम्मद की मेहर से माया और ब्रह्म की पहचान कराती हूं।

Nijanand App

प्रकृती पैदा करे, ऐसे कई इंड आलम।
ए ठौर माया ब्रह्म सबलिक, त्रिगुन की परआतम।। १० ।।

सबलिक ब्रह्म ऐसे करोड़ो माया के ब्रह्माण्ड बनाते और मिटाते हैं। यही सबलिक ब्रह्म प्रकृति और त्रिगुण का मूल ठिकाना है।

कई इंड अछर की नजरों, पल में होय पैदास।
ऐसे ही उड़ जात हैं, एकै निमख में नास।। ११ ।।

अक्षर के एक पल में ऐसे कई ब्रह्माण्ड पैदा होकर मिट जाते हैं।

केवल ब्रह्म अछरातीत, सत-चित-आनन्द ब्रह्म।
ए कह्यो मोहे नेहेचेकर, इन आनन्द में हम तुम।। १२ ।।

सिर्फ अक्षरातीत ही पारब्रह्म सच्चिदानन्द हैं। श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री प्राणनाथजी ने मुझे आकर यह दृढ़ता से बताया कि यही हमारा और सब सुन्दरसाथ के आनन्द का घर है।

कहे कतेब साहेदी साहेब की, दे न सके कोई और।
खुदाए की खुदाए बिना, किन पाया नाहीं ठौर।। १३ ।।

अंजील, जंबूर, तौरेत और कुरान ग्रन्थ यही कहते हैं कि खुदा की गवाही खुदा के सिवाय और कोई नहीं दे सकता, क्योंकि खुदा के घर का खुदा के सिवाय किसी को पता नहीं है।

ए कतेब यों कहत है, हादी सोई हक।
बिना साहेब साहेब वतन की, कोई और न मेटे सक।। १४ ।।

अंजील, जंबूर तौरेत, कुरान सभी कहते हैं कि खुदा की हकीकत जो बताता है, वही हादी है, वही हक है। उस साहेब के बिना साहेब के घर की पहचान और कोई नहीं दे सकता।

संसे मिटाया सतगुरें, साहेब दिया बताए।
सो नेहेचल वतन सरूप, या मुख बरन्यो न जाए।। १५ ।।

सतगुरु श्री देवचन्द्रजी महाराज (श्यामाजी) ने ही आकर सब संशय मिटाए और साहेब पारब्रह्म खुदा की पहचान कराई। उस अखण्ड वतन तथा उस अखण्ड स्वरूप की शोभा का वर्णन इस मुंह से नहीं हो सकता।

साख पुराई वेद ने, और पूरी साख कतेब।
अनुभव करायो आतमा, जो न आवे मिने हिसेब।। १६ ।।

खुदा की गवाही खुदा ही देगा। इस बात की गवाही वेद और कतेब ने दी। आत्मा ने भी अनुभव किया जिसे यहां के शब्दों में वर्णन करना सम्भव नहीं है।

हबीब बताया हादिएं, मेरा ही मुझ पास।
कर कुरबांनी अपनी, जाहेर करूं विलास।। १७ ।।

श्यामाजी ने आकर मेरे प्यारे धनी की पहचान कराई। वह मेरा प्यारा धनी मेरे अन्दर विराजमान है। अब मैं अपनी कुर्बानी करके धनी के आनन्द को जाहिर करती हूं।

तुम देखत मोहे इन इंड में, मैं चौदे तबक से दूर।
अंतरगत ब्रह्मांड तें, सदा साहेब के हजूर।। १८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे साथजी! तुम मुझे माया का तन होने के कारण इस ब्रह्माण्ड में समझ रहे हो। मैं चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड से बहुत दूर, ब्रह्माण्ड से अलग, सदा अपने धनी के पास रहती हूं।

Nijanand App

ब्रह्मसृष्टि और ब्रह्म की, है सुध कतेब वेद।
सो आप आखिर आए के, अपनो जाहेर कियो सब भेद।। १९ ।।

वेद और कतेब में ब्रह्मसृष्टि और ब्रह्म की जो पहचान बताई है, श्री राजजी महाराज ने आकर अपने सब भेद खोले।

महामत जो रूहें ब्रह्म सृष्ट की, सो सब साहेब के तन।
दुनियां करी सब कायम, सही भए महंमद के वचन।। २० ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि जो परमधाम की आत्माएं हैं, वह श्री राजजी महाराज के ही अंग हैं। उन्हीं के लिए सारी दुनियां को अखण्ड किया और रसूल मुहम्मद की कही वाणी को सही ठहराया।

॥ प्रकरण ॥ ६५ ॥ चौपाई ॥ ८०५ ॥

सैयां मेरी सुध लीजियो, जो कोई अहेल किताब।
तुम ताले लिख्या नूरतजल्ला, सुनके जागो सिताब।। १ ।।

हे कुरान के वारिस ब्रह्मसृष्टि (मोमिनो)! मेरी पहचान करना तुम्हारे नसीब में नूरतजल्ला (पारब्रह्म) ही लिखा है। उसकी हकीकत मुझ से समझकर जल्दी से सावधान हो जाओ।

ना छूटी सरीयत करम की, ना छूटी तरीकत उपासन।
मगज न पावे माएना, चले सब बस परे मन।। २ ।।

हिन्दुओं से कर्मकाण्ड और उपासना तथा मुसलमानों से शरीयत और तरीकत की रस्में नहीं छूटीं। उनको कुरान और पुराण की हकीकत की जानकारी नहीं है। सब मन के वश में होकर भटक रहे हैं।

दोऊ दौड़ करत हैं, हिंदू या मुसलमान।
ए जो उरझे बीच में, इनका सुन्य मकान।। ३ ।।

हिन्दू और मुसलमान दोनों दौड़ते हैं, परन्तु निराकार में जाकर उलझ जाते हैं।

जोगारंभी या कसबी, पोहोंचे ला मकान।
मोह तत्व क्यों ए न छूटहीं, कह्या परदा ऊपर आसमान।। ४ ।।

योग करने वाले हिन्दू या कसबी करने वाले मुसलमान निराकार तक ही पहुंचते हैं। इन किसी ने भी मोहतत्व को पार नहीं किया। इनके लिए खुदा (पारब्रह्म) आसमान के परदे में ही रह गया।

एक इलम ले दौड़हीं, और ले दौड़े ग्यान।
तित बुध न पोहोंचे सब्द, ए भी थके इन मकान।। ५ ।।

हिन्दू ज्ञान लेकर तथा मुसलमान इलम से दौड़े, परन्तु निराकार में जाकर फंस गए। इनकी बुद्धि आगे नहीं जा सकी।

दूजी कुरसी इत तरीकत, जाहेरी ऊपर फुरमान।
हकीकत मारफत की, ना किन किया बयान।। ६ ।।

दूसरी बन्दगी (तरीकत, उपासना) से मलकूत (बैकुण्ठ) की प्राप्ति होती है। यह शरीयत और तरीकत (कर्मकाण्ड और उपासना) की जाहिरी बन्दगी जीवों की बन्दगी है, ऐसा कुरान में फरमाया है। हकीकत और मारफत (ज्ञान और विज्ञान) की बन्दगी का वर्णन किसी ने नहीं किया।

Nijanand App